राजेन्द्र कुमार यौधेय

पिता : श्री नोख नारायण सिंह

जनम : 23 नवम्बर, 1923

जनम-स्थान : ग्राम-नियामतपुर, पो०-घोरहुआँ, भाया-मसौढ़ी (पटना)

सम्पादन : 'नर-नारी' मासिक पत्र में सम्पादन कार्य

पहली किरती परकासित : कविता मासिक **'किशोर'** में (नवम्बर 1943), कहानी साप्ताहिक **'नवशक्ति'** में (18 सितम्बर, 1944)।

सम्मान : डॉ० राम प्रसाद सिंह पुरस्कार से सम्मानित

परकासित रचना :

मगही

1. मगही व्याकरण
2. बिसेसरा (उपन्यास)
3. धर्मपुत्र (प्रबंध काव्य)
4. सुलोचना (प्रबंध काव्य)
5. मानिनी शकुंतला (महाकाव्य)
6. जुग के डाहट (निबंध संगरह)
7. चटके इँजोरिया राग के वन में (कविता संगरह)

हिन्दी

1. गीतार्चना (कविता संग्रह)
2. सहमान (महाकाव्य)
3. स्वधर्म (निबंध संग्रह)

ई कउनो इस्कूली सिच्छा न प्राप्त करलन बलुक स्वाध्याय करके ग्यान अर्जित कइलन। इनकर मगही कविता संगरह के नाम 'टहके इँजोरिया राग के वन में' हे । मगही में इनकर प्रसिद्ध उपन्यास 'बिसेसरा' हेवे, 'मानिनी शंकुतला' आ 'शिखर आ घाटी' इनकर चर्चित महाकाव्य हे ।

ई मुसहर संस्कृति के जबरदस्त चितेरा हथ। 'करिआवा बादर' मुसहर (दलित समुदाय) के चित्रन हे। मुसहरनी के करिया बादर में अप्पन राजा के लाख-लाख सुअर दिखाई पड़ऽ हे। जब बरसा बरस जा हे तऽ ओकर भरम के निवारन हो जाहे। ऊ फल्गु नदी के कछार पर सुअर चरावित, नाचित-गावित अप्पन संगी-साथी संग किल्लोल करित आनंद विभोर हो जाहे ।

करिआवा बादर

घट्टा के ओखा में टुभकइ टिटिहियाँ,
झनकावइ हिरदा के तार ।
खुलि गेलइ रजवा के लाख रे सुअरिया,
रंगे भेलइ छितीकार ।।

धउगित चढ़ित नब्भे मारित कुदकनिया
पुरबा बयरिया में सब्भे लऽ बहकलइ,
बिजुरी के कोरवा से मारि के हँकवइ,
हुलसल मन रजवा पीछू से लपकलइ ।

बनि गेलइ उड़ी बगुलवा के दलवा
रजवा के गलवा के हार ।।

करिया मुरेठवा के करिया हइ चुनवाँ,
करिया झुलफिया आ करिए सेहरवा;
ई पुरवा लफरवा में फर-फर उड़ऽ हइ,
लउकइ न रजवा के तनिको चेहरवा।

उड़ि रहलइ झुल्फी से सोंधा सुगंधिया,
बनि गेलइ मद के जुआर ।।

चल चललूँ लेके अब अपनो सुअरिया
मिली सब संगी–साथी बढ़ फल्गु किछरवा,

डोल-पत्ता खेललूँ, पारलूँ भुमरवा,
ई गगने गुँजयलूँ गीत के उचरवा।

बिच्चे गोल ठार राजा मँदरा बजावइ,
आइ नभ देवतन ठार ।।

रजवा के बधिया हम घटवा के मानलूँ,
गिरलइ फुहरिया तऽ जानलूँ भरमिया;
सतरंग कोरओली उड़िअयलूँ सड़िया,
नेहिया जगा बेधलूँ संगी मरमिया।

कोरवा के बिमवा घनवा पर उतरल,
दनवा के हरवा हजार।
खुलि गेलइ रजवा के लाख रे सुअरिया,
रंगे भेलइ छितीकार ।।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) 'करिआवा बादर' में कउन समुदाय के चित्रन करल गेल हे ?
(ख) इहाँ 'सुअर' कउन अरथ में प्रयोग भेल हे ?
(ग) 'रजवा' सबद के माध्यम से कवि का कहेला चाहइत हे ?
(घ) सही उत्तर पर ☑ लगावऽ :
ई कविता में प्रयोग कैल गेल हे :
(i) छायावाद (ii) रहस्यवाद (iii) प्रगतिवाद ।
(ङ) कवि के दूगो रचना के नाम बतावऽ ।

लिखित :

1. 'करिआवा' बादर कविता में प्रकृति चित्रन कउन रूप में भेल हे ?
2. ई कविता में प्रकृति के कउन रूप में मानवीकरण प्रस्तुत कयल गेल हे ?

3. निम्नलिखित के आसय लिखऽ :

(क) चल चललूँ लेके अब अपनो सुअरिया
मिली सब संगी-साथी बढ़ फल्गु किछरवा
डोल-पत्ता खेललूँ, पारलूँ भुमरवा;
ई गगने गुँजयलूँ गीत के उचरवा।
बिच्चे गोल ठार राजा मँदरा बजावइ;
आइ नभ देवतन ठार ।।

(ख) निम्नलिखित के व्याख्या करऽ :

रजवा के बधिया हम घटवा के मानलूँ
गिरलइ फुहरिया तऽ जानलूँ भरमिया
सतरंग कोर ओली उड़िअयलूँ सड़िया
नेहिया जगा बेधलूँ संगी मरमिया
कोरवा के बिमवा घनवा पर उतरल
दनवा के हरवा हजार
खुलि गेलइ रजवा के लाख रे सुअरिया
रंगे भेलइ छितीकार।।

4. 'करिआवा बादर' पढ़ला के बाद तोरा जे संदेस मिलऽ हे, ऊ पत्र के माध्यम से अपन बहिन के बतावऽ।

भासा-अध्ययन :

1. ई कविता में कउन-कउन बिम्ब तोरा अच्छा लगल ?
2. बादर के माध्यम से कवि के मुख्य भाव का परगट होवऽ हे, बतावऽ ।
3. कवि राजेन्द्र कुमार यौधेय परकिरती के एगो सफल चितेरा हथ एकरा से तू कहाँ तक सहमत हऽ।
4. ई कविता से छंद आउ अलंकार चुन के लिखऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. (क) एही तरह के कोई दूगो कविता संगरह करके वर्ग में सुनावऽ।

   (ख) कविता में कवि जे सबद चुनके परयोग कइलन हे ओकरा से तोरा पर का परभाव पड़ल ?

   (ग) राजेन्द्र कुमार यौधेय के 'बिसेसरा' उपन्यास पुस्तकालय इया कहीं से खोज के पढ़ऽ आउ ओकरा में जउन समाज के चित्रन भेल हे, बरनन करऽ (60 सबद में)

सब्दार्थ :

हिरदा	—	हिरदय
घट्टा	—	बादर
ओखा	—	ओट में
टुभकइ	—	बोलइ
टिटिहियाँ	—	पंछी के नाम
कुदकनिया	—	कूदना
बयरिया	—	हवा
सब्भे	—	सब
कोरवा	—	किनारा
हुलसल	—	खुस भेल
पीछू	—	पाछे
सतरंग	—	सात-रंग
छितीकार	—	छितिज में ।

●●●